हिन्दी विभाग

युवा मानसिकता

दुर्गेश प्रसाद
बीबीए विभाग
तृतीय छमाही

भारत देश की रीढ़ की हड्डी युवा वर्ग को कहा जाता है, देश को बनाने के लिए युवा मुख्य भूमिका निभाता है। किसी भी देश का भविष्य देश के युवाओं के द्वारा सुंदर बनता है। हमारा भारत देश तो युवाओं का ही देश है। हमारे देश की जनसंख्या का एक बड़ा हिस्सा युवा वर्ग का है, युवा उनको कहा जाता है जिनकी उम्र १५ साल से ४० साल के बीच हो। भारत देश को आजादी दिलाने में मुख्य भूमिका निभाने वाले भगत सिंह, सुभाष चन्द्र बोस, चन्द्रशेखर आजाद, खुदीराम बोस थे। इसके अलावा भी बहुत से स्वतंत्रता संग्रामी थे, जिन्होंने देश के नाम अपनी जान दे दी। भारतीय युवा ने देश को कहाँ से कहाँ पहुँचा दिया है, युवाओं के चलते ही देश ने इतनी तेजी से विकास किया है, लेकिन आज का भारतीय युवा स्वार्थी हो गया है, वो देश की तरक्की के बारे में न सोच कर सिर्फ अपने बारे में सोचता है। भारतीय युवा को अपनी जिम्मेदारी को समझना चाहिए -

अब समय आ गया है कि देश के युवा को अपनी जिम्मेदारी समझनी होगी। विकासशील से विकसित देश बनने के लिए उसे समाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, प्रशासनिक सभी विषयों में रुचि लेना होगा। एक मजबूत राष्ट्र विकास के लिए युवाओं में एक फौलादी जिगर, दृढ़ इच्छा शक्ति, पराक्रम, धैर्य, संयम की जबरदस्त मांग होती है। स्वामी विवेकानंद ने देश के युवा को हमेशा से बढ़ावा दिया। उनके विचार आज भी युवाओं के मन को प्रभावित करते हैं। यही कारण है कि विवेकानंद को कई लोग अपना आदर्श मानते है। आधुनिक भारत बनाने के लिए ये तीन बातों पर ध्यान देना बहुत जरूरी है :-

* आतंकवाद।
* भ्रष्टाचार।
* सांप्रदायिक असमानताओं।

१. देश के प्रति जिम्मेदारी – देश में बदलाव के लिए देश के युवा को देश से प्रेम रखना होगा। देश-प्रेम के चलते ही युवा देश की तरक्की के बारे में सोच पायेगा। देश प्रेम दिखाने के लिए युवा को राजनीति में रुचि दिखानी होगी। आज देश की बागडौर वृद्ध लोगों के हाथ में है। कुछ एकाध ही युवा राजनीति में सक्रीय है। जिससे राजनीति बद से बदतर होती जा रही है। ये बुढ़े नेता अपनी देखभाल तो सही से कर नहीं पाते है, देश की सेवा कैसे करेंगे। देश में युवाओं को देश का एक अच्छा नागरिक भी बनना चाहिए, देश के प्रति जिम्मेदारी जैसे वोट डालना, देश को स्वच्छ रखना, टैक्स भरना, घूस न लेना न देना आदि को समझना चाहिए। एक अच्छा नागरिक वही है, जो खुद भी जिम्मेदार बने और दूसरे को भी इसके लिए प्रेरित करे।

युवाओं का राजनीति के प्रति आक्रोश के कारण :-

* राजनीति में ऐसे बहुत से चेहरे है, जो राजनीति को मलिन कर रहे हैं, राजनीति में लालच, भ्रष्टाचार, सत्ता के लिए कुछ कर बैठना ये सभी आदत दिखाई देती है। जिससे युवाओं को राजनीति से घृणा होती जा रही है।
* देश में फैली अनेकों बुराइयों से दूर युवा दूसरे देश में रहना पसंद करते हैं, दूसरे देश में विकास के ज्यादा मौके समझ आते है।

* दूसरे देश वाले भारत के युवाओं को अधिक पैसा देकर वहीं रहने का मौका देते है, क्योंकि विदेशी भी मानते है, भारतीय युवा ज्यादा मेहनती होते हैं।
* अगर कोई युवा राजनीति में जाता भी है, तो सच्चे मार्ग में चलते हुए उसे सत्ताधारियों के द्वारा दबा दिया जाता है।
* मीडिया कई बार राजनीति का गलत चेहरा सबके सामने लाती है। जिससे युवा देश की राजनीति को दूर से ही गलत समझ लेता है।
* देश में युवा आवाज को अनुभव की कमी बताकर हमेशा दबाया जाता है।
* माता-पिता नहीं चाहते उनका बेटा राजनीति में आकर अपना भविष्य खराब करे क्योंकि माना जाता है कि जो कम पढ़ा-लिखा होता है, या जिसको पढ़ाई या काम में कोई रुचि नहीं होती है, वहीं राजनीति में आता है।
* माँ बाप भारत देश की राजनीति को देखकर अपने बच्चे को राजनीति में भेजने से डरते हैं।

देश के युवा जो राजनीति में शौक रखते है, वे दूर से बैठकर बस तमाशा देखकर, दूसरों की गलती निकालते हैं, उसे जाकर ठीक करने से डरते हैं। लेकिन कहते हैं कि कीचड़ को साफ करने के लिए कीचड़ में उतरना बहुत जरूरी है, उस कीचड़ से आपके उपर भी दाग लगेंगे, लेकिन वे अपनी छाप नहीं छोड़ पाएंगे।

युवा आज घर बैठे सोशल मीडिया के द्वारा अपनी आवाज तो बुलंद करने लगा है, ये एक अच्छा भी तरीका है, लेकिन इसके अलावा उसे राजनीति में भी अपना नाम लिखवाना होगा। वैसे आजकल के युवा चुप बैठने वाले में से नहीं है, कोई भी गलत बात होते ही, उसके बोर में सोशल मीडिया में ट्रेंडिंग चालू हो जाती है। लोग अपने अलग विचार उस पर प्रकट करते हैं। किसी चीज को सपोर्ट करने के लिए सोशल मीडिया पर आवाज उठाई जाती है, लेकिन ये बात भी सच है कि ये आवाज कई बार हमारे देश के ऊँचे स्थान पर बैठे नेताओं के कान तक नहीं पहुँचती है। सोशल मीडिया का माध्यम आज भी पूरी तरह से विश्वास करने योग्य नहीं है।

देश के युवा का राजनीति में आने से फायदा :-

१. विकसित, सशक्त देश बनेगा।
२. बेरोजगारी, आरक्षण की समस्या हल होगी।
३. शिक्षा में वृद्धि होगी।
४. आने वाला कल देश के लिए बहुत अच्छा होगा।

समाज के प्रति जिम्मेदारी - युवाओं को सामाजिक भी होना चाहिए। समाज हमारे लिए बनाया गया है। समाज की गतिविधियों में भाग लेना चाहिए। समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारी को समझना चाहिए। लेकिन कभी भी समाज की बातों में आकर गलत निर्णय नहीं लेना चाहिए। लोग क्या कहेंगे, समाज क्या कहेगा ये सोचकर कई बार इंसान गलत निर्णय ले लेता है। जिससे नुकसान समाज का नहीं, आपका ही होता है।

युवा अपनी जिम्मेदारी समझेंगे तभी वे आगे भविष्य में अपनी बच्चों को इसके बारे में बता सकेंगे। युवा शक्ति देश की सबसे बड़ी शक्ति है। आज हमारे देश का अधिकतर युवावर्ग पढ़ा-लिखाहै, इस बात का फायदा देश को भी मिलना चाहिए और देश को आगे बढ़ाने के लिए युवा को खुलकर समाने आना चाहिए। हमारे देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी भी युवा शक्ति को सबसे बड़ा मानते है, वो युवाओं से देश की राजनीति में आने के लिए प्रेरित भी करते हैं।

छोटी चींज में बड़ी बात

एक बच्चे ने अपनी माँ को कुछ लिखते देखा तो उसने अपनी माँ से पूछा आप पेंसिल से क्यों लिख रही हो? माँ ने कहा इस पेंसिल की बहुत बड़ी खासियत है यह सुनकर बच्चा सोचने लगा लिखने के अलावा इसकी और क्या खासियत हो सकती है। उसने अपने माँ से पूछा माँ ने बताया इस पेंसिल की पाँच खासियत है अगर इस खासियत को अपना लो तो जीवन शांतिपूर्वक बिताओगे।

* पहली खासियत : पेंसिल की पहली खासियत यह है कि यह बहुत अच्छा लिख सकती है और बहुत आगे जा सकती है केवल इसे एक अच्छे निर्देशक मिल जाए। उसी प्रकार व्यक्ती भी है अगर निर्देशक मिल जाए तो वह भी बहुत आगे जा सकता है।
* दूसरी खासियत : पेंसिल जिस प्रकार लिखते-लिखते टूट जाती है और उसे बीच में रुकना पड़ता है और उसे पैना करना पड़ता है जिससे उसे तकलिफ तो होती है पर वह अच्छे से लिखने लगती है उसी प्रकार व्यक्ति को भी धैर्य नहीं खोना चाहिए।
* तिसरा खासियत : जिस प्रकार पेंसिल से लिखा गया गलत शब्द रबड़ को मिटाने की इजाजत होती है उसे प्रकार व्यक्ति अपने जीवन में हुई गलतियों को मिटा सकता है।
* चौथी खासियत : जिस प्रकार पेंसिल के बाहर की लकड़ी को नहीं अन्दर के ग्रेफाइट को महत्व दिया जाता है उसी प्रकार व्यक्ति बाहर से कैसा दिखता है इसकी नहीं उसके अन्दर क्या है उसे महत्व मिलता है।
* पंचवी : सच्च को पहचान देना और सच्चाई महत्वपूर्ण है। पेंसिल की तरह हम भी अपनी पहचान बना सकते है इससे कोई फर्क नहीं की वह छोटी हो या बड़ी।

- Tulsi Dubey
B.A. 3rd Sem

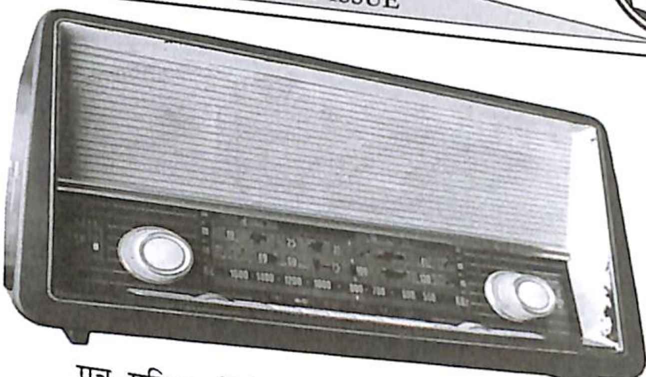

रेडियो

आरती कुमारी ठाकुर
एच.एस., प्रथम वर्ष

पत्र-पत्रिकाओं के बाद जिस माध्यम ने दुनिया को सबसे ज्यादा प्रभावित किया, वह रेडियो हैं। सन् १८९५ में जब इटली के इलैक्ट्रिकल इंजीनियर जी मार्कोनी ने वायरलेस के जरिए ध्वनियों और संकेतो को एक जगह से दूसरी जगह भेजने में कामयाबी हासिल की, तब रेडियो जैसा माध्यम अस्तित्व में आया। पहले विश्वयुद्ध तक यह सूचनाओं के आदान-प्रदान का एक महत्वपूर्ण औजार बन चुका था। शुरुआती रेडियो स्टेशन १८९२ में अमेरिकी शहर पिट्सबर्ग, न्यूयॉर्क और शिकागों में खुले। भारत में भी लगभग इसी समय में रेडियो की शुरुआत हुई। १९२१ में मुंबई 'टाइम्स ऑफ इंडिया' ने डाक-तार विभाग के सहयोग से संगीत कार्यक्रम प्रसारित किया १९३६ में विधिवत ऑल इंडिया रेडिया की स्थापना हुई और आजादी के समय तक देश में कुल नौ रेडियो स्टेशन खुल चुके थे। लखनऊ, दिल्ली, बंबई (मुंबई) कलकत्ता (कोलकाता), मद्रास (चेन्नई), तिरुचिरापल्ली, ढाका, लाहौर और पेशावर। जाहिर है इनमें तीन रेडियो स्टेशन विभाजन के साथ पाकिस्तान के हिस्से में चले गए।

आजादी के बाद भारत में रेडियो एक बेहद ताकतवर माध्यम के रूप में विकसित हुआ। सूचना और शिक्षा के अलावा देश की सामासिक संस्कृति को उभारने और राष्ट्रीय नवनिर्माण के लिए शुरू किए गए कार्यक्रमों को एक आवाज देने का काम रेडियो ने किया। आज आकाशवाणी देश की २४ भाषाओं और १४६ बोलियों में कार्यक्रम प्रस्तुत करती है। देश की ९६ प्रतिशत आबादी तक इसकी पहुँच हैं। १९९३ में एफएम की शुरुआत के बाद रेडियो के क्षेत्र में कई निजी कंपनियाँ भी आगे आई हैं। लेकिन अभी उन्हें समाचार और सम-सामायिक कार्यक्रमों के प्रसारण की अनुमति नहीं हैं। १९९७ में आकाशवाणी और दूरदर्शन को केंद्र सरकार के सीधे नियंत्रण से निकालकर प्रसार भारती नाम के स्वायत्तशासी निकाय को सौंप दिया गया। असल में, लंबे अर्से तक सरकारी नियंत्रण में रहने के कारण रेडियो में आ गई जड़ता को तोड़ने की पहल १९९५ में उच्चतम न्यायालय के एक फैसले ने की। इस फैसले में कहा गया की ध्वनि तरंगों पर किसी का एकाधिकार नहीं हो सकता और उन्हें मुक्त किया जाना चाहिए। एफ.एम. के दूसरे चरण के साथ देश के ९० शहरों में ३५० से अधिक निजी एफएम चैनल शुरू हो रहे हैं।

रेडियो एक ध्वनि माध्यम हैं। इसकी तात्कालिकता, घनिष्ठता और प्रभाव के कारण गांधी जी ने रेडियो को एक अद्भुत शक्ति कहा था। ध्वनि तरंगों के जरिए यह देश के कोने-कोने तक पहुँचा है। दूर-दराज के गाँवों में जहाँ संचार और मनोरंजन के अन्य साधन नहीं होते, वहाँ रेडियो ही एकमात्र साधन हैं, बाहरी दुनिया से जुड़ने का और अखबार, टेलिफोन की तुलना में यह बहुत सस्ता भी हैं। इसलिए भारत के दुरदराज के इलाकों में लोगों ने रेडियों क्लब बना लिया हैं। रेडियों श्रव्य माध्यम हैं। इनमें सब कुछ ध्वनि, स्वर और शब्दों का खेल हैं। इन सब जगहों से रेडियो को श्रोताओं से संचालित माध्यम माना जाता है। रेडियो में अखबार की तरह पीछे लौटकर सुनने की सुविधा नही हैं। रेडियों की तरह टेलीविजन भी एकरेखीय माध्यम है लेकिन वहाँ शब्दों और ध्वनियों की तुलना में दृश्यों / तस्वीरों का महत्व सर्वाधिक होता है। टी.वी. में शब्द दृश्यों के अनुसार और उनके सहयोगी के रूप में चलते हैं। लेकिन रेडियो में शब्द और आवाज ही सब कुछ है।

बंकिमचंद्र चटर्जी - "वन्देमातरम्"

- आशा दत्ता
बी.बी.ए. तृतीय छमाही

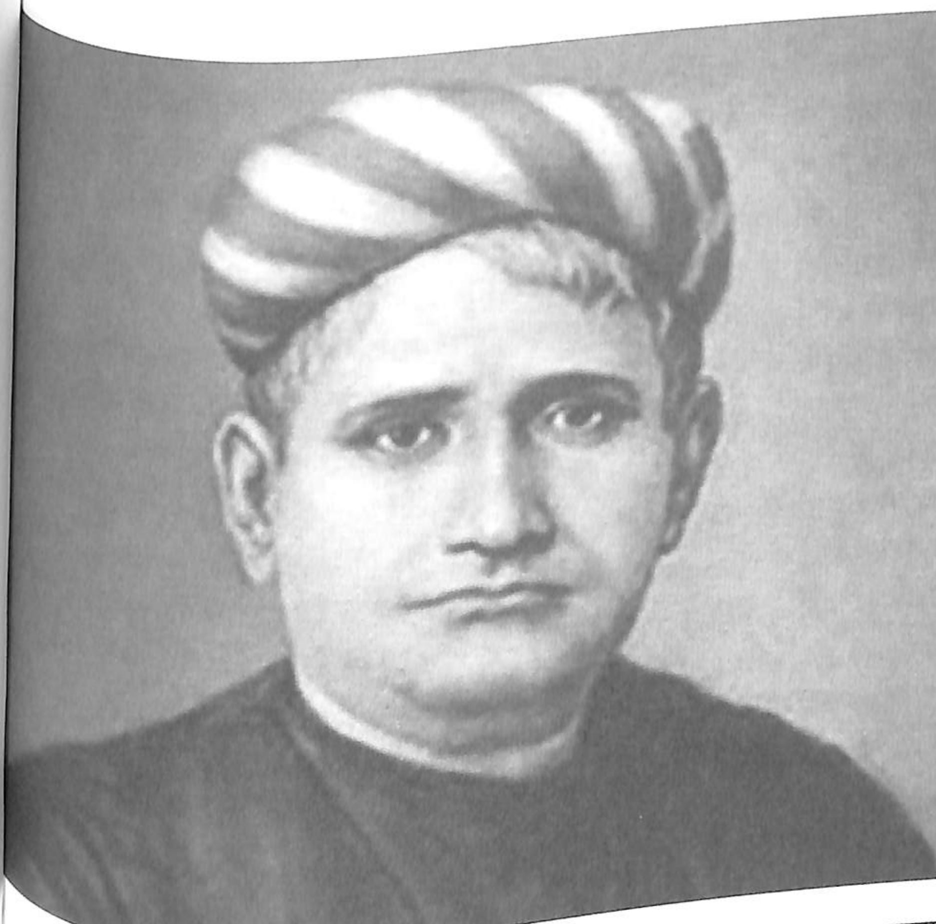

बंकिमचंद्र चटर्जी का हमारे देश के उन महान साहित्यकारों में सर्वश्रेष्ठ स्थान है, जिन्होंने अपनी रचनाओं के माध्यम से समूचे भारतवर्ष में स्वतंत्रता एवं जागृति का ऐसा मन्त्र फूंका कि सारे भारतवासी वन्देमातरम् के जय घोष के साथ सर्वस्व बलिदान करने हेतु तैयार हो उठे।

स्वतंत्रता क्रान्ति के अग्रदूत, वन्देमातरम् गीत के प्रेणना बंकिमचंद्र का जन्म सन् १८३८ को कोलकाता के निकट कांटालपाड़ा ग्राम में एक उच्च ब्राह्मण परिवार में हुआ था। उनके पिता श्री यादवचंद्र चटोपाध्याय बंगाल के मेदिनापुर जिले के डिप्टी कलेक्टर थे।

अत: बंकिम की प्राथमिक शिक्षा वहीं पर हुई। बचपन से ही उनकी रुचि संस्कृत के प्रति थी। अंग्रेजी के प्रति उनकी रुचि तब समाप्त हो गई, जब उनके अंग्रेजी अध्यपक ने उन्हें बुरी तरह डांटा था। पढ़ाई से अधिक खेलकुद में उनकी विशेष रुचि थी। वे एक मेधावी व मेहनती छात्र थे। १८५८ में कॉलेज की परीक्षा पूर्ण कर ली। बी.ए. की परीक्षा में वे प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हुए। पिता की आज्ञा का पालन करते हुए उन्होंने १८५८ में ही डिप्टी मजिस्ट्रेट का पदभार संभाला। सरकारी नौकरी में रहते हुए उन्होंने १८५७ का गदर देखा था, जिससे शासन प्रणाली में आकस्मिक परिवर्तन हुआ। शासन भार ईस्ट इंडिया कम्पनी के हाथों आ गया था। सरकारी नौकरी के होने के कारण वे किसी सार्वजनिक आन्दोलन में प्रत्यक्ष भाग नहीं ले सकते थे। अत: उन्होंने साहित्य के माध्यम से स्वतंत्रता आन्दोने के लिए जागृति का संकल्प लिया।

यह समय बंगाल भाषा को प्राण प्रतिष्ठा दिलाने वाले बंकिम ही थे। बंकिम ने मासिक पत्रिका बंगदर्शन का सम्पादन किया। रविन्द्रनाथ की रचनाएं इसी पत्रिका में प्रकाशित

होती थीं। रविन्द्र बाबू को महान साहित्यकार बनाने का श्रेय उन्हें भी है। साहित्य प्रचार, देश सेवा नवलेखकों को प्रोत्साहन देने के विचार से उन्होंने बंगदर्शन का प्रकाशन जारी रखा।

उनका पहला उपन्यास दुर्गेश नन्दिनी प्रकाशित हुआ। संस्कृत भाषा में प्रकाशित इस उपन्यास में अकबरयुगीन सामाजिक, राजनीतिक परिस्थितियों का सजीव चित्रण है। उनका दूसरा उपन्यास कपाल कुण्डला एक काल्पनिक उपन्यास है। जिसमें कापालिकों के आचार-व्यवहार का चित्रण है।

उनका सर्वश्रेष्ठ उपन्यास है – आनन्दमठ, जो तत्कालीन समय में देशभक्तों के गले का कण्ठहार था। आनन्दमठ के संन्यासी पात्र के माध्यम से वंदेमातरम् का जयघोष किया गया। वंदेमातरम् शीर्षक से लिखे इस गीत ने न केवल राष्ट्रीय गीत का गौरव हासिल किया, अपितु भारतवासियों के आजादी का पर्याय बन गया। अंग्रेजी के कब्जे से बचने के लिए बंकिमचंद्र ने इसकी कथा को प्रतीकात्मक रूप में चित्रित किया। इसके पश्चात मृणालिनी, विषवृक्ष, चन्द्रशेखर, इन्दिरा, राजसिंह आदि कई उपन्यास उन्होंने लिखे।

सरकारी नौकरी पर रहते हुए बंकिम ने बड़खोली गांव पर धावा बोलने वाले अंग्रेज लुटों का दमन किया। उसमें से २५ को काला पानी, एक को फांसी की सजा तक सुनाई। इसके एवज में मिलने वाली जान से मारने की धमकी से वे जरा भी भयभीत नहीं हुए। अपनी योग्यता और सुझबुझ से वे हमेशा अंग्रेजों का विरोध करते हुए देशभक्ति के लिए समर्पित रहे। निश्चित रूप से यह कहना ही बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय ने वंदेमातरम् के माध्यम से राष्ट्रीयता के जो जागृति भरे संस्कार गुलाम भारतीय को दिए, उनके लिए भारतवासी उनके सदा ऋणी रहेंगे। ऐसे साहित्यसेवी, देशसेवी, सच्चे भारतीय का देहवसान सन् १८९४ को बहुमुत्र की बीमारी से हुआ।

सुविचार

१) मैदान में हारा हुआ इंसान
फिर से जीत सकता है
लेकिन
मन से हारा हुआ इंसान
कभी नहीं जीत सकता।

२) मंजिल उनको मिलती है,
जिनके सपनों में जान होती है
सिर्फ पंखो से नहीं होता दोस्तों
हौसलों से उड़ान होती है।

संग्रहीत – **रीना महतो**
बी.ए. तृतीय छमाही

अहंकार का पतन

- पंखी प्रणयी वर्मण
प्रथम छमाही, हिन्दी विभाग

बहुत वर्ष पहले की बात है। सोवनसिरि नदी के किनारे एक गाँव था जिसका नाम था .... । इस गांव के सभी लोग अनपढ़ थे। वहाँ के बच्चे खेलकुद में ही अपना जीवन बिताते थे, पढ़ने-लिखने का कोई इच्छा नहीं था। उन बच्चों के बीच एक बच्चा था जिसका नाम था रामदास। रामदास को मूर्ति बनाना काफि अच्छा लगता था। गाँव के अधिक लोग मूर्तियां बनाकर अपना जीवन व्यतित करते थे। छोटी अवस्था से ही रामदास ने लोगों के साथ रहकर यह कला सिख लिया था। ज्यों ज्यों वह बड़ा होने लगा मुर्तियां बनाने की कला भी प्रखर होती गई। रामदास गाँव के सभी मूर्तिकार से माहीर हो गया था। उनकी मूर्तियाँ प्रशंसा दूर-दूर तक फैल गई। गाँव-शहर के भी लोग उसकी मूर्तियों को देखने के लिए आते थे। मुर्तियाँ बेचकर वह एक बड़ा आदमी बन गया था। समय बीत जाने पर, रामदास को अपने आप पर बड़ा अहंकार होने लगा था। अहंकार ही सर्वनाश का मूल है। श्रीकृष्ण ने भगवत गीता में कहा है - 'नदी के उपर नौका चलने से कुछ नहीं होता पर जब नौका के अंदर पानी जाता है तो नौका डूब जाता है।' ठीक उसी तरह रामदास का पतन का समय आ गया था।

मूर्तियां बनाते हुए बहुत वर्ष बीत गया था। समय के साथ-साथ रामदास बुढ़ा हो गया था और बीमार भी रहने लगा था। वह समझ गया था कि उसकी मृत्यु का समय निकट आ गया है। रामदास अपने मृत्यु से बहुत डरता था, वह बहुत वर्ष जीवित रहना चाहता था। इसलिए उसने एक योजना बनायी। रामदास ने अपने जैसा और दस मूर्तियां बनाई। जिसको देखकर यमदूत को भ्रम हो जाए। तब से लेकर हर दिन उन मूर्तियों के बीच में रहने लगा था।

पर हर दिन, हर रात तो एक जैसा नहीं होता था। हर दिन समय बदलता रहता है। रामदास की भी मृत्यु की दिन आ गई। एक दिन यमदूत उसे लेने के लिए आ गया था। यमदूत आकर देखा की एक जैसे ग्यारह मूर्तियां हैं। वह परेशान हो गया था। यमदूत का तो काम ही है लोगों के प्राण हरण करना। यदि यमदूत ने मूर्तियों को तोड़कर देखे तो कलाओं का अपमान होगा इसलिए यमदूत ने एक योजना बनाई। उन्होंने मूर्तियों का अपमान और बुराई करने लगे। यह कि 'कितनी सुंदर मूर्तियां किसने बनाई यदि मूर्तिकार को मिल जाता मैं कह सकता कि मूर्तियों में क्या-क्या खराबी है।' इस बात को सुनकर मूर्तिकार गुस्सा हो गया और वह मूर्तियों के बीच से बाहर निकल आया। तब यमदूत ने उसके प्राण हरण कर ली और उसका अहंकार भंग कर मुक्ति दे दी।

इस कहानी से हमें यह सिख मिलता है कि - 'अहंकार दु:ख और परेशानी का मूल होता है, अहंकार लोगों को दु:ख के सिवा और कुछ नहीं देता।' इस बात की इतिहास गवाह है।

मन को शांति और हमें सफलता कैसे मिलेगी

– रीना महतो
बी.ए., तृतीय छमाही

आज की दुनिया में हर इंसान सिर्फ अपना-अपना देखने में लगा है। किसी को भी किसी और की चिंता नहीं है। थोड़ी सी भी दया आज किसी में बची नहीं है। कभी धर्म के नाम पर लड़ रहे हैं तो कभी दौलत और लालच के नाम पर तो कभी अमीरी-गरीबी के नाम पर .... बस एकता और भाईचारे को तो जैसे हमने जमीन में दफन ही कर दिया है। दोस्तों वाकई अगर हम सब एक हो जाए तो किसी देश की इतनी हिम्मत नहीं की वो हमारी तरफ आँख उठाकर देख सके घर में घुसने की तो बात ही छोड़ दो। बस एक बार अगर हिन्दु, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई आपस में है सब भाई-भाई का नारा एक आवाज में लग जाए और हम सब देश के प्रति लोगों के प्रति, समाज के प्रति परिवार के प्रति अपनी जिम्मेदारी को समझ ले दोस्तों और जान ले की अगर हम सब एक साथ नहीं रहे तो हमारा देश और हम सब अपनी ताकत खो देंगे। शायद हम खुद ही अपने देश, अपने संस्कार, अपने समाज और अपने आप को खोखला और कमजोर कर रहे हैं। कोशिश करता हूं एक कहानी के माध्यम से समझाने की : –

एक बार एक शरीर की सारी इंद्रियाँ एकमत हुई और हड़ताल कर दी। इंद्रियाँ मानती थी कि वो अथाह मेहनत करती है लेकिन फिर भी उन्हें अनका श्रेय नहीं मिलता और उन्होंने कहा सारा दिन मेहनत हम करें और मेहनत का सारा माल ये सारा पेट हजम कर जाए तो भी अकेला ये तो हमारे लिए असहनीय है। आँख, कान, नाक, पांव सबने अपने-अपने दल बना लिए सभी का कहना था कि अब वो लोग खुद कमाई करेंगे। उस कमाई को वो खुद खायेंगे और किसी दूसरे के साथ वो इसे साझा नहीं करेंगे। पेट ने सबको समझाया कि तुम सब जितनी मेहनत करते हो और कमाकर मुझे खिलाते हो वो सब मैं तुम्ही को तो लौटा देता हूं ताकि तुम मजबूत बनो और इसलिए तुम अपनी हड़ताल करने का इरादा त्याग दो और इसमें भी तुम्हारा ही नुकसान है। ये सही नहीं है लेकिन किसी ने भी उसकी एक नहीं सुनी। सभी इंद्रियों ने कहा तुम तानाशाह हो और पेट की नहीं मानते हुए उन्होंने अपनी हड़ताल शुरू रखी और काम करना बंद कर दिया। पेट को कुछ नहीं मिलने के कारण शरीर ने रक्त रस कम हो गया और इंद्रियाँ भी कमजोर होने लगी। सभी अंगों की शक्तियाँ भी कम होने लगी सभी अंगों की शक्तियाँ भी कम और धीरे-धीरे पूरा शरीर कमजोर पड़ने लगा। तो अब इंद्रियों को अपने किये पर पछतावा होने लगा और दिमाग ने उनको चेताया कि तुम्हारे काम करने के तुम्हारी मेहनत न केवल पेट भरता है बल्कि जो तुम उसके लिए करते हो वो उतना बल्कि उस से अधिक तुम्हारे पास लौट कर वापस आता है। दूसरों की सेवा कर हमे कभी घाटे में नहीं रहते बल्कि ये हमेशा अच्छा होता है। तुम अपना कर्तव्य पूरा करो और तुम्हें उसका फल अवश्य ही मिलेगा। और दिमाग की बाते सुनकर इंद्रियां काम पर लौट आई। और फिर सारी इंद्रियां स्वस्थ हो गया। और फिर तब से शरीर के सभी अंग एक साथ रह कर एक साथ काम करने लगे और एक दूसरे को ताकत देने लगे तो पाया कि शरीर भी स्वस्थ और ताकतवर होते चला गया।

उसी प्रकार ये देश हमारा शरीर है और हम सब इसके अंग अगर हम आपस में ही एक दूसरे के प्रति ईर्ष्या, द्वेष और बदले की भावना रखेंगे तो नुकसान पूरे शरीर का होगा और हर अंग को होगा। एक बनो नेक बनो और एक दूसरे को आगे बढ़ने की ताकत दो, हो सके उतना सहयोग करो और फिर देखों देश को और हमारे मन को कितनी शांति और तरक्की मिलती है।

उपन्यास समीक्षा

मुझे चांद चाहिए

- डॉ . मोनालिसा चक्रवर्ती
अतिथि अध्यापिका
हिन्दी विभाग, (वाणिज्य शाखा)

'मुझे चांद चाहिए' उपन्यास सुरेन्द्र वर्मा की एक ऐसा उपन्यास है जिसमें हर पात्र में एक जुनुन है कुछ कर दिखाने की, कुछ असम्भवसा कर गुजरने की, इस उपन्यास का मुख्य विषय है अभिनय। अभिनय के लिए जो जजबा पात्रों में पैदा किया गया है वह इस उपन्यास की खासियत है, उपन्यास में बहुत से परम्परागत मूल्यों को तोड़ा गया है। इसमें जो पात्र चित्रित हुए हैं उनके जरिए सुरेन्द्र वर्मा ने हर उस पहलू की ओर संकेत किया है जिसको व बदलना चाहते हैं और उन्होंने इस उपन्यास में बदला भी है।

इस उपन्यास में एक पक्ष जो बहुत नजदीक से, बहुत गहराई से दिखाया गया है वह है मानवीय रिस्तों का पक्ष, साथ ही मूल्यों की विचारो की टकराहत देखने को मिलता है। पिता कुछ चाहते है और बेटी कुछ और चाहती है, तो टकराहट होना स्वाभाविक है, परिवार के अन्य लोगों (स्त्री) ने जो जीवन जीया है वर्षा (नायिका) उस जिन्दगी को अस्वीकार करती है। छोटे उर्म से ही उसके मन में एक सवाल था 'क्यों उसे भी वैसा ही जीवन जीना होगा, जैसा अम्मा, ददा और जिजी का है ?' वर्षा के पिता किशन दास शर्मा प्राइमरी स्कूल में संस्कृत के अध्यापक थे। एक निम्न मध्यमवर्गीय परम्पारागत नियमों से बंधा हुआ परिवार में होने के बावजूद वर्षा ने उन सभी नियमों, बंधनों और मूल्यों को तोड़कर आगे बढ़ने की, अभिनय के क्षेत्र में अपना एक अलग अस्तित्व कायम करने की प्रयास किया और वह सफल हुई। वर्षा का जीवन संघर्ष उपन्यास की पहले पन्ने से अंतिम पन्ने तक विद्यमान है, इस उपन्यास का एक मुख्य स्वर जो सम्पूर्ण उपन्यास का जान है वह है संघर्ष, हर पात्र कुछ न कुछ पाने के लिए संघर्षरत है। समाज से, परिवार से, अपने आप से हर कोई संघर्ष कर रहा है। तमाम कठिन परिस्थितियों का सामना करके ही वर्षा मंच से जुड़ पाई, उसमें वह साहस थी की वह अपने लिए अपनी मर्जी के मुताबिक कुछ कर सके चाहे उसमें किसी का साथ हो या न हो। यह साहस उसको दिव्या से मिला। जिसको वर्षा अपने होने का कारण मानती है। एन. एस. डी. की सभी पात्र जो सुरेन्द्र वर्मा ने चित्रित किया है किसी न किसी से संघर्ष कर रहा है। विवाह और प्रेम की कई स्थितियां इस उपन्यास में देखाी गई है, हर्ष और वर्षा, फिर वर्षा और सिद्धार्थ और बीच में मिट्ठू का प्रेम प्रसंग वर्षा के जीवन से जुड़ी हुई है।

वर्षा और हर्ष के प्रेम प्रसंग को इस उपन्यास में बहुत संजीदगी से और गहराई से चित्रित किया गया है। वर्षा उपन्यास की नायिका है तो हर्ष नायक, दोनों एन.एस.डी. में पहली बार मिलते है। 'अपना अपना नर्क' नाटक में दोनों ने एक साथ पहली बार अभिनय किया, इस परिचय से ही दोनों एक दूसरे के प्रति आकर्षित होते है और प्रेम बंधन में बंध जाते है।

हम देखते हैं कि प्रेम की परिभाषा हर अध्याय में अधिक अर्थवान और दृढ़ होता जाता है। बीच-बीच में हर्ष के साथ वर्षा का मतान्तर होता है लेकिन सिर्फ मंच तक ही। वर्षा कभी हर्ष से अलग नहीं हो पाई। हर्ष अंत तक

उसका सम्बल रहा। बीच में सिद्धार्थ और वर्षा का प्रेम प्रसंग आता है लेकिन वह बहुत सुलझा हुआ नहीं है। सिद्धार्थ से वर्षा का लगाव बहुत हद तक मानसिक ही था। ये भी कह सकते है कि वर्षा सिद्धार्थ में हर्ष का विकल्प ढुढ़ती थी। अगर हर्ष से वह प्यार करना छोड़ देती तो ये उपन्यास एक सार्थक अंत तक नहीं पहुंचता, अगर वर्षा सिद्धार्थ से जुड़ जाती तो कहानी का शक्ल दूसरा होता, ये कहानी का एक ऐसा मोड़ है जहाँ पर हम क्यों का सवाल उठा सकते है। क्या यह सम्भव है कि किसी से भावात्मक स्तर पर गहरी रूप से जुड़ने के बावजूद किसी और से भी जुड़ सकते है। सुरेन्द्र वर्मा ने कुछ ऐसा ही दिखाया है।

इस उपन्यास में वर्षा और दिव्या और वर्षा और शिवानी का मित्रता एक ऐसा पक्ष है जो उपन्यास को एक नया अर्थ देता है। दिव्या के साथ वर्षा का जुड़ना संयोगवश होता है। लेकिन ये ही संयोग उसकी जिन्दगी बदल देता है। सुलतानगंज की 'सिलबिल' एक प्रतिस्थित अभिनेत्री वर्षा वशिष्ठ बन जाती है, जिसका श्रेय वर्षा दिव्या को देती है। दिव्या का वर्षा से जुड़ना भावात्मक स्तर पर वर्षा को साहस देता है, जिन्दगी के हर स्तर पर हर मुसिबत पर वर्षा ने दिव्या को अपने साथ पाया, लेकिन जब वर्षा और शिवानी की मित्रता की बात आती है तो यह सवाल उठता है कि इस रिस्ते की इमानदारी कहाँ तक है ? वह दोनों हर्ष के वजह से जुड़ी है। हर्ष को पाने की चाहत दोनों में है। शायद शिवानी वर्षा को इसलिए अपनाती क्यों कि वह उस हर्ष की प्रेमिका है जिसे वह भी प्यार करती है। हर्ष को न पाने की गम को भूलने के लिए शिवानी वर्षा के पास आती है (शायद) मानवीय रिश्तों के अलावा सुरेन्द्र वर्मा ने स्त्री जीवन के बहुत सारे ऐसे दरवाजे खोलते है जिन्हें हम प्रत्येक स्त्री पात्र के जीवन में एक आदर्श के रूप में पाते हैं। अगर हम वर्षा वशिष्ठ के जीवन क्रम को देखे तो स्त्री जीवन से जुड़े, हर पहलू से रुबरु होते हैं।

'वर्षा वशिष्ठ'

वर्षा वशिष्ठ या सिल बिल ५४ सुलतानगंज की एक निम्न मध्यवर्गीय परिवार की महत्वकांक्षाओं से पूर्ण वह लड़की है जिसे जीवन में कुछ करना था। कुछ नामुमकिन सा कर गुजरना था। वर्षा की बचपन का नाम था यशोदा शर्मा, जो उसे कतई पसंद नहीं था, उसके मुताबिक उस नाम में सौन्दर्यबोध नहीं था।

आत्मन्वेषण की जीवनभर चलने वाली सुदीर्घ यात्रा की शुरुवात सिलबिल ने अपना नाम बदलकर किया था। यशोदा शर्मा से वर्षा वशिष्ठ दूसरों से अलग एकान्तप्रिय और चिंतनशील सिलबिल अपने लिए एक अलग दुनिया बसाना चाहती थी। नाम बदलने की प्रसंग में पिता द्वारा पूछे गये प्रश्नो का उत्तर सिलबिल ने ऐसे दिया जैसे नाम न होकर किसी अति सुन्दर बस्तु का सौन्दर्य विश्लेषण कर रही हो। नाम जैसी सरलता से स्वीकृत चींजों के प्रति ऐसा नया दृष्टिकोण वर्षा की सौन्दर्यप्रिय स्वभाव से परिचित कराता है।

सिलबिल (वर्षा) अपनी वंश की सात पीढ़ियों में काम करने वाली पहली लड़की थी। अपनी जिम्मेदारियों को खुद निभाने की भावना से उस ने टियुशन लेना शुरू किया। आर्थिक स्वतंत्रता के क्षेत्र में यह उसका प्रथम पदक्षेप। उसके परिवार में ये सबकुछ एक लड़की के लिए अकरणीय, अनुचित अशोभनीय था, वर्षा को लोगों के कुछ कहने का परवाह नहीं था। वर्षा अपनी भविष्य को लेकर प्रारम्भ से ही चिंतित दिखाई देती है। 'मेरा क्या होगा ?' इस तरह के सवाल ने उसके मन को निरंतर छेदना शुरु कर दिया था। विचारो का टकराव, मतभेद ने उसे अपने घर वालों से दूर कर दिया था। सिलबिल उस जीवन को नहीं जीना चाहती थी जो जीवन अम्मा, दद्दा और जिज्जी जी रहे हैं। अपने रक्त संबंधियों के लिए उसके मन में जो भावनाएं थी, वे हमदर्दी, उदासीनता, कारुणा और आक्रोश के दायरे में ही सीमित था। वर्षा के मन में घरवालों के प्रति आक्रोश का भाव उन दिनों अधिक हो गया जब व दिव्या कात्याल से मानसिक तौर पर जुड़ गई और पिता, भाई के परवाह किये बिना मंच से अपना नाता जोड़ लिया। मंच ने, अभिनय ने वर्षा को वह सबकुछ दिया जिसका अभाव वह अपनी वास्तविक जीवन में बुरी तरह महसूस करती थी, वर्षा के

लिए अभिनय उसके कटू यथार्थ से पलयान था। अनुशासन, परम्परा, नियम, से जकड़े हुए घर से दूर रहना चाहती थी। उसका ये पलायन था तो अस्थायी, पर उतनी देर वह शांति और संतोष जैसे अनुभवों को जीती थी। अभिनय ने उसे जीवन की सुन्दरता को महसुस करना सिखाया, वर्षा की अतृप्त वासनाओं को मंच पर तृप्ति मिलता, दुखमय वर्षा का जीवन मंच में सुखमय हो जाता है।

आजाद ख्यालों वाली वर्षा अपनी स्वाभिमान के प्रति सदैव सचेत रही। वर्षा का चरित्र एक स्वाभिमानी, आत्म विश्वासी स्त्री का चरित्र है। जीवन में आनेवाली हर परिस्थिति का सामना उसने बहुत धैर्यपूर्वक किया।

हर्ष के मौत के बाद वर्षा का एक नया रूप सामने आता है। वह भावनात्मक रूप में विधवा हो गई थी। उसका चांद हमेशा के लिए बुझ गया फिर भी उसको जीना था हर्ष के बच्चे के लिए। अवैध मातृत्व को समाज स्वीकार नहीं करता और वर्षा ने एक ऐसा कदम उठाया जो पुर्णत: समाज विरोधी था। भावात्मक रूप से वह हर्ष से अलग नहीं हो पाई। शारीरिक रूप से हर्ष उसके पास नहीं था, लेकिन हर्ष की उपस्थित वह महसूस कर सकती थी, वर्षा को अपने ऊपर जो विश्वास था वह अंत तक बना रहा। वर्षा कला के प्रति पून: समर्पित हुई। फिल्म जगत में उसने अपना कैरियर आगे बढ़ाया और उसे काफी सफलता भी मिली लेकिन मानसिक तौर पर वह तृप्त नहीं थी जो मंच से उसको वह तृप्ति मिलता था। जिसका अभाव वह अपनी जिन्दगी में महसूस करती रही। उपन्यास के अंत में हम देखते हैं कि वर्षा पुन: मंच से जुड़ जाती है। इसके माध्यम से सुरेन्द्र वर्मा ने कलाकरों को आगे बढ़ने का एक रास्ता दिखाया है।

उपन्यास में समझौतावादी वृत्ति को दिखाया गया है। वर्षा समझौता करती है कला के सामने परंतु हर्ष समझौता नहीं करता। पूरे उपन्यास में एक ही मूल्य बचा है। वह भी हर्ष में, सुरेन्द्र वर्मा के मन में मूल्यों के प्रति इतना लगाव है कि वे अपने पात्रों को इन मूल्यों को छोड़ने नहीं देते। नाट्य शैली के कारण ही हर्ष की मृत्यु हो जाती है। हर्ष की मौत मूल्यों की मौत है। हर्ष के मृत्यु के बाद अंत में वर्षा अपना अभिनय रंगमंच को समर्पित कर देती है। इसके माध्यम से सुरेंद्र वर्मा ने कलाकारों को एक रास्ता दिखाया है।

अंत के प्रश्न आता है वर्षा का अकेले रहना कितना व्यवहारिक है? अवैध मातृत्व को अपनाने की जो निश्चय वर्षा करती है वह तो एक बहुत साहसपूर्ण पदक्षेप माना जा सकता है, लेकिन ऐसा सोचा जा सकता है कि सुरेन्द्र वर्मा पुरुष होने के नाते उसे अकेले रहने का निर्णय दे देते हैं। उपन्यास की अंत कुछ और भी हो सकता था लेकिन सुरेन्द्र वर्मा ने वर्षा के लिए उस जीवन को चुना जिस में वह अपना अस्तित्व कायम रख सके।

<u>शीर्षक की सांकेतिकता</u> : मुझे चांद चाहिए शीर्षक बहुत अर्थपूर्ण है, उपन्यास का सारा भाव इस शीर्षक में अन्तरनिहित है। उपन्यास में हर पात्र का एक चांद है। जिसे वह किसी भी किमत में पाना चाहता है। वर्षा का चांद हर्ष है। हर्ष के मृत्यु पर वर्षा ने कहा 'मेरे वास्ते चंद्रमा हमेशा के लिए बुझ गया है।' वर्षा और हर्ष दोनों को अपने काली नियति के आगे झुकना पड़ता है। हर्ष का चांद है अभिनय, उसके जीवन में जो कुछ भी घटना घटित होता है उसके मौत तक सब इस अभिनय के लिए। वह अभिनय करना चाहता था समझौता नहीं। इस उपन्यास का मूल है अभिनय ...... वह चांद जिसको पाने की चाहत सब में है। चंद्रमा को पाने की चाहत सब में होती है हाथ भी फैलाते हैं लेकिन सबको चंद्रमा मिलता कहाँ है ....।

जिंदगी संतुलन बनाए रखने का खेल है

- अनीता कुमारी
बी.ए., तृतीय छमाही

आपने सर्कस में तनी हुई रस्सी पर चलने वाले व्यक्ति को देखा होगा। जरा कल्पना कीजिए उस तनी रस्सी पर चलने वाले व्यक्ति की। गद्दे से ढकी फर्स से कुछ फुट ऊपर रस्सी पर एक व्यक्ति खड़ा है। उसका उद्देश्य रस्सी के एख छोर से दूसरे छोर तक चलना है। अपना संतुलन बनाये रखने के लिए उसके हाथ में डंडा है। उसने अपने कंधों पर एक कुर्सी संतुलित की है और उस कुर्सी पर एक महिला बैठी है जिसने अपने माथे पर एक चरखी संतुलित की है और इश चरखी पर एक प्लेट रखी है।

वह रस्सी पर चलने वाला व्यक्ति या कलाकार तब तक काम प्रारम्भ नहीं करता जब तक की उसके ऊपर रखी सारी चीजें ठीक से जम नहीं जाती। इसके बाद ही वह धीरे-धीरे और सावधानीपूर्वक दूसरे छोर पर जाने के लिए चलना प्रारम्भ करता है।

लेकिन चलते समय अगर उसे महसूस होता है कि संतुलन बिगड़ रहा है तो वह थोड़ा रूक के फिर से संतुलन बनाता है। उस रस्सी पर चलने वाले व्यक्ति के लिए संतुलन ही सबकुछ होता है। अगर वह संतुलन बनाए रखने में असफल हो जाए तो वह निश्चित ही गिर जाएगा। उसी तरह जिंदगी भी बहुत हद तक संतुलन बनाए रखने का खेल है वरना नीचे गिरने में वक्त नहीं लगता। हम अपने उद्देश्यों के साथ अपने लक्ष्य को प्राप्त करने की कोशिश कर रहे हैं और अपनी जिंदगी में अलग-अलग चीजों जैसे पैसे, रिश्ते-नाते, दोस्ती, समय के बीच संतुलन बनाते हुए आगे बढ़ रहे हैं।

हमेशा ज्यादातर लोगों का संतुलन पैसों को लेकर ही बिगड़ता है। अगर हमारे पास प्रयाप्त धन न हो तो हमारा जीवन धन के पीछे भागने और दौड़ने वाल बन जाता है और हम उसी कार्य में लग जाते हैं।

हम अपनी सारी ताकत को अपनी वित्तीय अवस्था सुधारने में लगा देते हैं। इस स्थिति में हम अपने परिवार, अपने दोस्तों, अपनी आध्यात्मिक और अपनी मानसिक आवश्यकताओं, यहाँ तक की अपने स्वास्थ्य की ऊर्जा को भी छीनकर लगाने लगते हैं। और ऐसी स्थिति में हम अपना उद्देश्य लक्ष्य को बिलकुल भूल जाते हैं और बस एक ही चीज ध्यान में रहती है कि बस किसी भी तरह अपनी आर्थिक स्थिति को सुधार लें ताकि जीवन की गाड़ी पटरी पर आजाए इसके बाद हम अपनी सारी ताकत जीवन के तमाम दूसरे पहलुओं को सुधारने में लगा देंगे। दोस्तों जीवन में संतुलन जरूरी है अगर आज आप एक पहलु पर ध्यान देते हैं और दूसरे पहलु पर ध्यान नहीं देते तो निश्चित ही आपका संतुलन बिगड़ेगा और आप जमीन पर होंगे। जीवन के पहलू को महत्व दें और सभी के बीच संतुलन बनाते हुए अपने लक्ष्य को प्राप्त करें। ऐसा करने पर आप पाएंगे की आपका जीवन कितना सुखमय है।

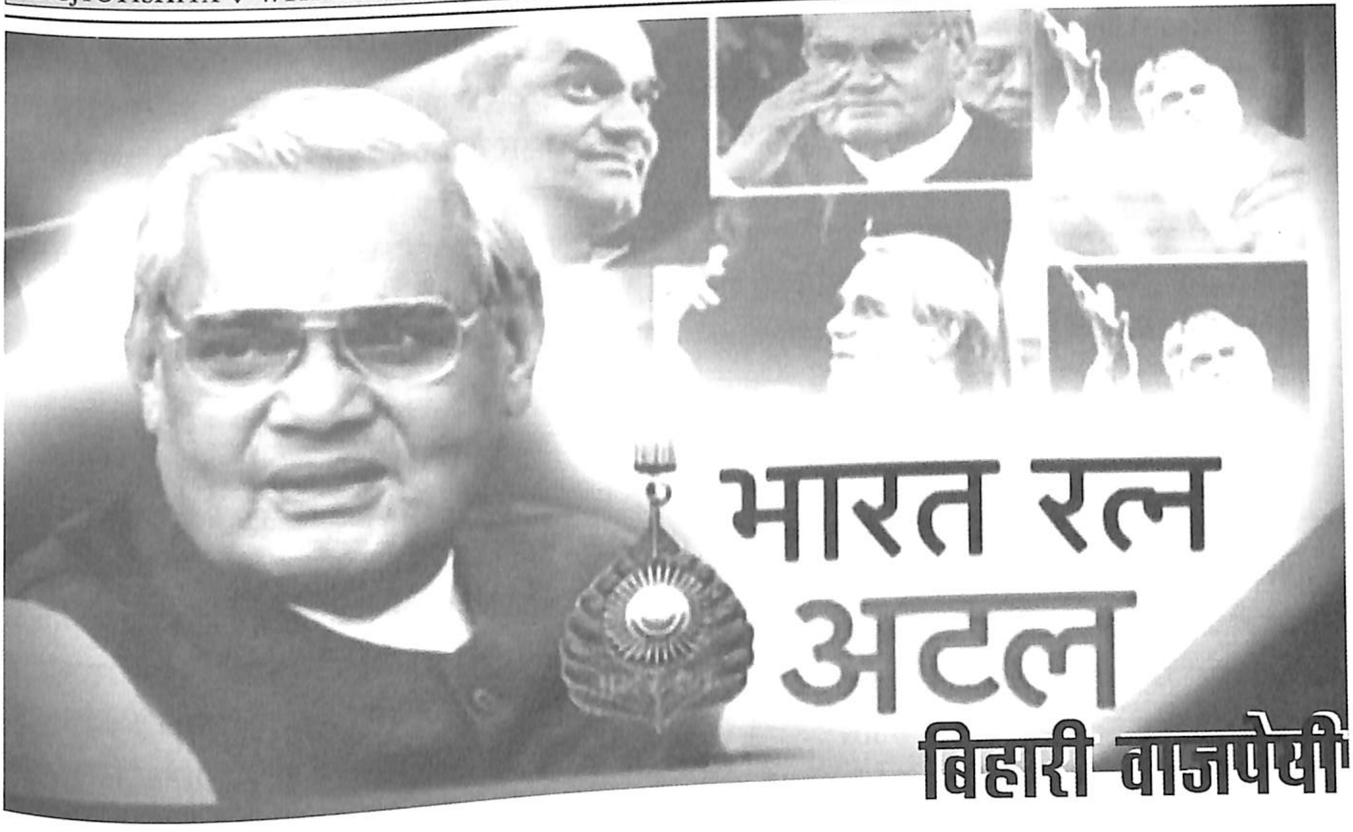

- भनीता हालै
तृतीय छमाही

भारत रत्न अटल बिहारी वाजपेयी भारत के पूर्व प्रधानमंत्री होने के साथ-साथ एक सफल कवि, पत्रकार और प्रखर वक्ता भी थे। आपके पिता कृष्ण बिहारी वाजपेयी उत्तर प्रदेश में आगरा जनपद के प्राचीन स्थान वटेश्वर के मूल निवासी थे। कृष्ण बिहारी वाजपेयी मध्य प्रदेश की ग्वालियर रियासत में अध्यापक थे। वहीं शिन्टे की छावनी में २४ दिसंबर १९२४ को ब्रह्ममुहूर्त में उनकी सहधर्मिनी कृष्ण वाजपेयी की कोख से अटल जी का जन्म हुआ था। पिता कृष्ण बिहारी वाजपेयी ग्वालियर में अध्यापन कार्य तो करते ही थे इसके अतिरिक्त वे हिन्दी व ब्रज भाषा के सिद्धहस्त कवि भी थे।

अटल जी की शिक्षा 'महात्मा रामचन्द्र वीर द्वारा रचित अमर कृति 'विजय पताका' पढ़कर अटल जी के जीवन की दिशा ही बदल गयी। अटल जी की बी.ए. की शिक्षा ग्वालियर के विक्टोरिया कालेज में हुई। छात्र जीवन में वे राष्ट्रीयसेवक संघ के स्वयंसेवक बने और तभी से राष्ट्रीय स्तर की वाद-विवाद प्रतियोगिताओं में भाग लेते रहे। कानपुर के डीसवी कॉलेज से राजनीति शास्त्र में एम.ए की परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की। उसके बाद उन्होंने अपने पिताजी के साथ-साथ कानपुर में ही एल.एल.बी की पढ़ाई भी प्रारम्भ की लेकिन उसे बीच में ही विराम देकर पूरि निष्ठा से संघ के कार्य में जुट गए। डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी और पण्डित दीनदयाल उपाध्याय के निर्देशन में राजनीति का पाठ तो पढ़ा ही साथ-साथ पंचजन्य, राष्ट्रधर्म, दैनिक स्वदेश और वीर अर्जुन जैसे पत्र-पत्रिकाओं के सम्पादन का कार्य भी कुशलतापूर्वक करते रहे। सर्वतोमुखी विकास के लिए किए गये योगदान तथा असाधारण कार्यो के लिए २०१५ में 'भारत रत्न' से सम्मानित किया गया।'

२. राजनीतिक जीवन :

अटल बिहारी वाजपेयी जी भारतीय जनसंघ की स्थापना

करने वालों में से एक थे और सन् १९६८ से १९७३ तक वह उसके राष्ट्रीय अध्यक्ष भी रह चुकें थे। सन् १९७७ में उन्होंने पहली बार लोकसभा चुनाव लड़ा परन्तु सफलता नहीं मिली। परन्तु उन्होंने हिम्मत नहीं हारी। १९५७ से १९७७ तक जनता पार्टी की स्थापना की। वे बीस वर्ष तक लगातार जनसंघ के संसदीय दल के नेता रहे। मोरारजी देसाई की सरकार में सन् १९७७ से १९७८ तक विदेश मंत्री रहे और विदेशों में भारत की छवि बनाई।

सन् २००४ में कार्यकाल पूरा होने से पहले भयंकर गर्मी में सम्पन्न कराये गए लोकसभा चुनावों में भा.ज.पा. के नेतृत्व में राष्टीय जनतांत्रिक गठबंधन ने वाजपेयी के नेतृत्व में चुनाव लड़ा और भारत उदय का नारा दिया। इस चुनाव में किसी भी पार्टी को बहुमत नहीं मिला। ऐसे में वामपंथी दलों के समर्थन से कांग्रेस ने भारत की केंद्रीय सरकारपर कायम होने में सफलता प्राप्त की और भा.ज.पा. विपक्ष में बैठने को मजबूर हुई। सम्प्रति वे राजनीति में सन्यास ले चुके हैं और नई दिल्ली में छः ए कृष्णमेनन योग स्थित सरकारी आवास में रहते थे।

३. प्रधानमंत्री के रूप में अटल का कार्यकाल :

१. भारत को परमाणु शक्ति सम्पन्न राष्ट्र बनाना : अटल सरकार ने ११ और १३ मई १९९८ को पोखरण में पांच भूमिगत परमाणु परीक्षण विस्फोट करके भारत को परमाणु शक्ति संपन्न देश घोषित कर दिया। इस कदम से उन्होंने भारत को निर्विवाद रूप से विश्व मानचित्र पर एक सुदृढ़ वैश्विक शक्ति के रूप में स्थापित कर दिया। यह सब इतनी गोपनीयता से किया गया कि अति विकसित जासूसी उपग्रहों व तकनीक से संपन्न पश्चिमी देशों को इसकी भनक तक नहीं लगी। यही नहीं इसके बाद परिश्रमी देशी द्वारा भारत पर अनेक प्रतिबंध लगाया गया लेकिन वाजपेयी सरकार ने सबका दृढ़तापूर्वक सामना करते हुए आर्थिक विकास की ऊँचाइयों को छुआ।

२. पाकिस्तान से संबंधों में सुधार की पहल :

१९ फरवरी १९९९ को सदा-ए-सरहद नाम से दिल्ली से लाहौर तक बस सेवा शुरू की गई। इस सेवा का उद्घाटन करते हुए प्रथम यात्री के रूप में वाजपेयी जी ने पाकिस्तान की यात्रा करके 'नवाज शरीफ' से मुलाकात की और आपसी संबंधों में एक नई शुरुआत की।

३. कारगिल युद्ध :

कुछ समय पश्चात पाकिस्तान के तत्कालीन सेना प्रमुख परवेज मुशर्रफ की शहपर पाकिस्तानी सेना व उग्रवादियों ने कारगिल क्षेत्र में घुसपैठ करके कई पहाड़ी चोटियों पर कब्जा कर लिया। अटल सरकार ने पाकिस्तान की सीमा का उल्लंघन न करने की अंतर्राष्ट्रीय सलाह का सम्मान करते हुए धैर्यपूर्वक किन्तु ठोस कार्यवाही करके भारतीय क्षेत्र को मुक्त कराया। इस युद्ध में प्रतिकुल परिस्थितियों के कारण भारतीय सेना की जान माल का काफी नुकसान हुआ और पाकिस्तान के साथ शुरु किया गया संबंध एक बार फिर शुन्य हो गए।

४. स्वर्णिम चतुर्भुज परियोजना :

भारत भर के चारो कोनों को सड़क मार्ग से जोड़ने के लिए 'स्वर्णिम चतुर्भुज परियोजना' की शुरुआत की गई। इसके अंतर्गत दिल्ली, कोलकाता, चेन्नई व मुम्बई को राजमार्गों से जोड़ा गया। ऐसा माना जाता है कि अटल जी के शासनकाल में भारत में जितनी सड़कों का निर्माण हुआ केवल शेरशाह सूरी के समय में ही हुआ था।

५. वाजपेयी सरकार के अन्य प्रमुख कार्य :-

१. एक सौ साल से भी ज्यादा पुराने कावेरी जल विवदा को सुलझाया।
२. संरचनात्मक ढांचे के लिए कार्यदल, सॉफ्टवेयर विकास के लिए सूचना एवं प्रौद्योगिकी कार्यदल, विद्युतीकरण में गति लाने के लिए केंद्रीय विद्युत नियामक आयोग

आदि का गठन किया।

३. राष्ट्रीय सुरक्षा समिति, आर्थिक सलाह समिति व्यापार एवं उद्योग समिति भी गठित की।

४. आवश्यक उपभोक्ता सामग्रियों की कीमतें नियंत्रित करने के लिए मुख्यमंत्रियों का सम्मेलन बुलाया।

५. उड़ीसा के सर्वाधिक गरीब क्षेत्र के लिए सात सूत्रीय गरीबी उन्मूलन कार्यक्रम शुरू किया।

६. अवास निर्माण को प्रोत्सहान देने के लिए अर्बन सीलिंग एक्ट समाप्त किया।

७. ग्रामीण रोजगार सृजन एवं विदेशों में बसे भारतीय मूल के लोगों के लिए बीमा योजना शुरू की।

८. सरकारी खर्चे पर रोजा विज्ञप्तियों के माध्यम से समय-समय पर प्रकाशित होते रहे हैं।

६. **कवि के रूप में अटल : -**

अटल बिहारी वाजपेयी राजनीतिज्ञ होने के साथ-साथ एक कवि भी थे। 'मेरी इक्कावन कविताएं' अटल जी का प्रसिद्ध काव्यसंग्रह थे। वायपेयी जी की काव्य रचनाशीलता एवं रसास्वाद के गुण विरासत में मिले हैं। वे ब्रजभाषा और खड़ी बोली में ही काव्य की रचना करते थे।

उनकी सर्वप्रथम कविता थी 'ताजमहल'। इसमें श्रृंगार रस के प्रेम प्रस्तुत न चढ़कर 'एक शहशाह' ने बनवा के हसीं ताजमहल, हम गरीबों की मोहब्बत का उड़ाया हैं मजाक की तरह उनका भी ध्यान ताजमहल के कारीगरों के शोषण पर ही गया। वास्तव में कोई भी कवि हृदय कभी कविता से वंचित नहीं रह सकता। अटल जी ने किशोर अवस्था में ही एक अद्भुत कविता लिखी थी - 'हिन्दू तन-मन, हिन्दू जीवन, रग-रग हिन्दू मेरा परिचय, आदि।'

राजनीति के साथ-साथ समष्टि एवं राष्ट्र के प्रति उनकी वैयक्तिक संवेदनशीलता आद्योवान्त प्रकट होती ही रही है। अनेक संघर्षमय जीवन, परिवर्तनशील परिस्थितियां, राष्ट्रव्यापी आंदोलन, जेल-जीवन आदि अनेक आयामों के प्रभाव एवं अनुभूति ने काव्य में सदैव ही अभिव्यक्ति पायी। विख्यात 'गजल' गायक जगजीत सिंह ने अटल जी की चुनिंदा कविताओं का संगीतबद्ध करके एक एलबम भी निकाला था।

७. **मृत्यु :**

वाजपेयी जी की २००९ में एक दौरा पड़ा था, जिसके बाद वह बोलने में अक्षम हो गए थे। उन्हें ११ जून २०१८ में किडनी में संक्रमण और कुछ अन्य स्वास्थ्य समस्याओं की वजह से 'अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान' (एमस) में भर्ती कराया गया था, जहां १६ अगस्त २०१८ को शाम ०५:०५ बजे उनकी मृत्यु हो गयी। उनके निधन पर जारी एमस के औपचारिक बयान में कहा गया।

जिसमें प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी समेत सैकड़ो नेता गण पैदल चलते हुए गंतव्य तक पहुंचे। वाजपेयी के निधन पर भारत भर में सात दिन के राजकीय शोक की घोषणा की गयी।

अमेरिका, चीन, बंग्लादेश, ब्रिटेन, नेपाल और जापान समेत विश्व के कई राष्ट्रों द्वारा उनके निधन पर दुःख जताया गया।

अटल जी की अस्थियों को देश की सभी प्रमुख नदियों में विसर्जित किया गया।

इन्सानियत की पहचान

नयन ज्योति दास

बीए. प्रथम छमाही, हिन्दी विभाग

कभी-कभी हमलोगों के आँखो के सामने कुछ ऐसी घटनाएँ घट जाती हैं जिसे हमलोग कभी-भी भूल नहीं पाते। यह बात है साल 2017 के किसी एक दिन की। तब मैं बी. बरुवा कॉलेज के बारहवीं कक्षा में पढ़ रहा था

मैं आमतौर पर घर से कॉलेज और कॉलेज से घर तक का सफर बस से करता हूँ। उस दिन हामारे कॉलेज में एक सभा थी तो कॉलेज से घर निकलने में मुझे थोड़ी देर हो गयी ,थका-हारा मैंने जैसे-तैसे गुवाहाटी क्लब से बस पकड़ लिया। शाम का वक्त था इसलिए सभी गाड़ियाँ यात्रियों से भरी हुई थीं। मुझे बैठने के लिए जगह नहीं मिला तो मे खड़ा ही था ।

बस आधी मंजिल तक ही पहुँच पायी थी तभी एक अंधा बच्चा बस में चढ़ गया और थोड़ी-सी मदद के लिए सभी लोगों से विनती करने लगा। मुझे उस बच्चे पर दया आ गयी, तो मैंने उसको ५ रुपए का एक सिक्का दे दिया। इसके बाद वह मुझे छोड़कर बस के आगे की ओर जाने लगा।

मैं बड़े ही गौर से उसको देख रहा था। तभी मैंने ऐसा कुछ देखा जिसे देखकर मैं पूरी तरीके से हिल गया था। एक बूढी औरत जिसकी कपड़ो से ही पता चल रहा था कि वह किसी बड़े ही गरीब घर से थी, शायद उनको दो वक्त का भी खाना ठीक तरह से नसीब नहीं होता होगा , पर उन्होंने अपने झोले से दस रुपय का एक नोट बच्चे को दे दिया । मुझे यह देखकर ऐसा लगा कि अब भी कुछ इंसान ऐसे हैं जिन्हें अपने से ज्यादा दूसरों की चिंता है।

लेकिन समाज में भला एक प्रकार का ही इंसान रहते हैं? उस बस में कुछ ऐसे भी इंसान थे, जो देखने में तो सम्पन्न घर के अमीर व्यक्ति प्रतीत हो रहे थे। परन्तु उनके जेबों से उस बच्चे के लिए एक फूटी कौड़ी भी नहीं निकला

समाज के इस चेहरे को उस दिन इतने करीब से देखकर मैं चौक गया । आखिर समाज में कुछ ऐसे लोग भी हैं जो महीने में लाखों कमाते हैं मगर एक पैसा भी दूसरों के लिए खर्च नहीं करते। लेकिन मुझे यह जानकर भी अच्छा लगा कि उस बूढ़ी औरत जैसे भी कुछ गिने-चुने लोग अभी भी जिंदा हैं । आज भी इस कीचड़ रूपी संसार में कुछ कमल रूपी लोग भी रहते हैं।

सुविचार

१) जब तक जीवन है, तब तक
सीखते रहो क्योंकि अनुभव ही
सर्वश्रेष्ठ शिक्षक है।

२) जीना है तो अच्छे
बनकर जियो
दिखावे के लिए तो
हर कोई जीता है।

संग्रहीत - **अनिता यादव**
बी.ए. तृतीय छमाही

ईश्वर

– नयनज्योति दास
बी.ए. प्रथम छमाही, हिन्दी विभाग

हे ईश्वर,
एक राह तो दिखा,
जीवन का लक्ष्य क्या ?
यह बात तो बता।

तुम्ही ने तो
जुन्म दिया है
तुम्ही ले जाओगे,
फिर इस तरह दु:ख देकर
तुम क्या पाओगे।

बुलाना है तो अभी बुलाओ
बाद की अपेक्षा क्यों ?
जिंदगी दो या जान ले लो
लेकिन तड़पाओं हमे न इयों

खो खोकर थक चुका हूँ
जिंदगी से अब हार चुका हूँ,
कहने को तो जी रहा हूँ
पर जी जीकर भी मैं मर चुका हूँ।

नयी पीढ़ी की सोच

– अभिषेक तिवारी
एच.एस., प्रथम वर्ष

नयी सदी से मिल रही, दर्द भरी सौगात
बेटा कहता बाप से, तेरी क्या औकात !
पानी आँखों का मरा, मरी शर्म और लाज!
कहे बहु अब सास से, घर में मेरा राज!
भाई भी करता नहीं, भाई पर विश्वास
बहन पराई हो गयी, भाड़ी खासमखास!
मंदिर में पूजा करे, घर में करें कलेश!
बापु तो बोझ लगे, पत्थर लगे गणेश!
बचे कहाँ अभी शेष है, दया, धरम, ईमान!
पत्थर के भगवान है, पत्थर दिल इंसान!
पत्थर के भगवान को, लगते छप्पन भोग!
मर जाते फुटपाथ पर, भुखे प्यासे लोग!
फैला है पाखंड का, अन्धकार सब ओर
पापी करते जागरण, मचा-मचा कर शोर!
पहन मुखौटा धरम का, करते दिन भर पाप!
भंडार करते फिरे, घर में भूखा बाप!

बेटी

– अनिता यादव

जब-जब जन्म लेती है बेटी,
खुशियाँ साथ लाती है बेटी।
ईश्वर की सौगात है बेटी,
सुबह की पहली किरण है बेटी।
तारों की शीतल छाया है बेटी।
आंगन की चिड़िया है बेटी,
त्याग और समर्पण सिखाती है बेटी,
नए-नए रिश्ते बनाती है बेटी।
जिस घर जाए, उजाला लाती है बेटी।
बेटी की कीमत उनसे पूछो,
जिनके पास नहीं है बेटी।

সাধাৰণ সম্পাদকৰ প্ৰতিবেদন

নমস্কাৰ, প্ৰতিবেদনৰ আৰম্ভণিতে সকলোকে আন্তৰিক শ্ৰদ্ধা আৰু শুভ কামনা জ্ঞাপন কৰিছো আৰু যিসকলে দেশ মাতৃৰ বাবে নিজৰ জীৱন ছিগা কৰিছে বিদেহী আত্মাৰ চিৰশান্তি কামনা কৰিলোঁ। এই ছেগতে প্ৰাগজ্যোতিষ মহাবিদ্যালয় স্থাপন কৰাৰ ক্ষেত্ৰত যিসকল মহান ব্যক্তিৰ একান্ত, প্ৰচেষ্টা, সাধনা আৰু ত্যাগৰ বলত এই মহাবিদ্যালয়খনি বৰ্তমান, এখন ঐতিহ্যমণ্ডিত মহাবিদ্যালয় আৰু হাজাৰ হাজাৰ ছাত্ৰ-ছাত্ৰীৰ জীৱন গঢ়াৰ সপোনবোৰ বাস্তৱৰূপত প্ৰতিফলিত কৰাৰ এক বৃহৎ শিক্ষানুষ্ঠান হিচাপে পৰিচয় দিবলৈ সক্ষম হৈছে, সেই মহান ব্যক্তিসকলৰ চৰণত প্ৰাণপাত জনাইছো।

প্ৰাগজ্যোতিষ মহাবিদ্যালয়ৰ ছাত্ৰ-একতা সভাৰ সাধাৰণ নিৰ্বাচনত লোৱা ২০১৭-২০১৮ শিক্ষাবৰ্ষৰ সাধাৰণ সম্পাদকৰ পদত প্ৰতিদ্বন্দ্বিতা আগবঢ়াইছিলো, য'ত মহাবিদ্যালয়ৰ ছাত্ৰ-ছাত্ৰীসকলে মোক সমৰ্থন আগবঢ়াইছিল। এনে এটি গাম্ভীৰ্যপূৰ্ণ পদৰ বাবে মই যদিও নিজকে যোগ্য বুলি ভবা নাছিলো তথাপিও বন্ধুবৰ্গ আৰু মহাবিদ্যালয়ৰ ছাত্ৰ-ছাত্ৰীসকলৰ একান্ত সমৰ্থন আৰু সহায় সহযোগিতাৰ বাবেই সাহ কৰি এই পদটিৰ বাবে আগবাঢ়ি গৈছিলো। নিৰ্বাচন প্ৰক্ৰিয়াত যিসকল ছাত্ৰ-ছাত্ৰী তথা বন্ধু-বান্ধৱীয়ে মোক সহায় কৰিছিল তেওঁলোকক এই প্ৰতিবেদনৰ জৰিয়তে আন্তৰিক ধন্যবাদ জ্ঞাপন কৰিলোঁ।

মোৰ দায়িত্ব অৰ্পণ কৰাৰ পিছতেই প্ৰথম অনুষ্ঠান অনুষ্ঠিত হৈছিল বিদ্যাৰ অধিষ্ঠাত্ৰী দেৱী 'সৰস্বতী দেৱী পূজা' ভাগ। বিগত বছৰৰ দৰে এইবেলিও ২২ জানুৱাৰী, ২০১৮ তাৰিখে মহাবিদ্যালয়ত সৰস্বতী পূজা উলহ-মালহেৰে উদ্‌যাপন কৰা হয়। পূজাত সকলো ছাত্ৰ-ছাত্ৰী তথা ছাৰ-বাইদেউসকলৰ সহযোগিতা দৃষ্টি মধুৰ আছিল।

পূজাভাগ সমাৰ্পণ হোৱাৰ পিছতে অনুষ্ঠিত হয় মহাবিদ্যালয়ৰ বাৰ্ষিক ক্ৰীড়া সপ্তাহ। ছাত্ৰ-ছাত্ৰীসকলৰ প্ৰতিভা বিকাশৰ প্ৰতি গুৰুত্ব ৰাখি মহাবিদ্যালয় সপ্তাহত সাহিত্য, ক্ৰীড়া, সাংস্কৃতিক দিশৰ বিভিন্ন প্ৰতিযোগিতা আয়োজন কৰা হয়। মহাবিদ্যালয় সপ্তাহৰ শুভাৰম্ভণি কৰা হয় পতাকা উত্তোলনৰে। পতাকা উত্তোলন কৰে মহাবিদ্যালয়ৰ অধ্যক্ষ মহোদয় ড০ পৰমানন্দ ৰাজবংশীদেৱে।

মহাবিদ্যালয় সপ্তাহৰ বিভিন্ন প্ৰতিযোগিতাত ছাত্ৰ-ছাত্ৰীসকলৰ আশাব্যঞ্জৰ অংশ গ্ৰহণে মহাবিদ্যালয় সপ্তাহ চলাই নিয়াত আমাৰ উৎসাহ-উদ্দীপনা যোগায়। যিসকল ছাত্ৰ-ছাত্ৰীয়ে প্ৰতিযোগিতাসমূহ সাফল্যমণ্ডিত কৰাত সহায় কৰিছিল তেখেতসকললৈ মই ধন্যবাদ জ্ঞাপন কৰিছোঁ। কিয়নো মোৰ দৃষ্টিত প্ৰতিযোগিতাত অংশগ্ৰহণ কৰিবলৈ হ'লে যে পুৰস্কাৰ পাবই লাগিব তেনে নহয়। প্ৰতিযোগিতাত অংশ গ্ৰহণ কৰাটোৱেই ডাঙৰ কথা। ক'বলৈ গ'লে মহাবিদ্যালয় সপ্তাহখন হৈছে ছাত্ৰ-ছাত্ৰীসকলৰ বাবে এক দাপোণস্বৰূপ।

ভৱিষ্যতৰ আশা, সপোন সোণোৱালী কৰি তুলিবলৈ অহা সমূহ নৱাগতক আদৰণী জনোৱাৰ উদ্দেশ্যে মহাবিদ্যালয়ৰ নৱাগত আদৰণি সভাখনি অনুষ্ঠিত কৰা হয়। নৱাগত আগৰণি সভাখনৰ সৈতে সংগতি ৰাখি অনুষ্ঠিত

কৰা মুকলি সভাখনত গীত পৰিবেশণ কৰে অসমৰ জনপ্ৰিয় গায়কা আলিতা কাশ্যব। বিভিন্ন ধৰণৰ বাবে বৰণীয়া কাৰ্যসূচীৰে ন-পুৰণি প্ৰীতি সন্মিলনত সকলো ছাত্ৰ-ছাত্ৰীৰ উপস্থিতিয়ে সন্মিলনৰ সৌষ্ঠৱ বঢ়াই তোলে।

১৯৫৪ চনৰ ১ ছেপ্তেম্বৰৰ দিনটোতেই আমাৰ এই তীৰ্থস্বৰূপ মহাবিদ্যালয়খন স্থাপন হৈছিল। সেই গতিকে প্ৰতিবছৰে ১ ছেপ্তেম্বৰ তাৰিখে আমাৰ মহাবিদ্যালয়ত প্ৰতিষ্ঠা দিৱস উদ্‌যাপন কৰা হয়।

কাৰ্যকালৰ প্ৰতিটো মুহূৰ্ততে বিভিন্ন প্ৰকাৰে সহায় আগবঢ়োৱা মোৰ শ্ৰদ্ধাৰ শিক্ষাগুৰুসকল আৰু শিক্ষক কৰ্মচাৰীসকল, ছাত্ৰ-একতা সভাৰ সমূহ সদস্যবৃন্দৰ আৰু মোৰ বন্ধু-বান্ধৱীসকলৰ ওচৰত মই সদায় ঋণী হৈ থাকিলোঁ।

মোৰ কাৰ্যকালত কৰিব পৰা বহুখিনি কামেই আছিল যদিও বহু অসুবিধাৰ বাবে সেইখিনি কৰিব নোৱাৰিলো। আচলতে এবছৰ অতি কম সময়। এই এবছৰীয়া কাৰ্যকালত কিমান দূৰ সফল হ'ব পাৰিলোঁ। সেয়া সমূহ প্ৰাগজ্যোতিষীয়াৰ ওপৰত এৰি দিলোঁ। কিন্তু মই মোৰ সামৰ্থ্য অনুযায়ী নিজকে উজাৰি দিবলৈ চেষ্টাৰ ক্ৰুটি কৰা নাছিলো। মোৰ বাকী থকা কামখিনি পিছৰ ছাত্ৰ-একতা সভাৰ সাধাৰণ সম্পাদকে কৰিব বুলি আশা কৰিলো। মোৰ কাৰ্যকালত অজানিতে যদি কিবা ভুল হৈছিল, তাৰ বাবে মোক ক্ষমা কৰিব জনিৰ অনুৰোধ কৰিলোঁ।

শেষত আমাৰ মৰমৰ প্ৰাগজ্যোতিষ মহাবিদ্যালয়ৰ কল্যাণ আৰু দীৰ্ঘায়ু কামনা কৰি মোৰ এই প্ৰতিবেদনৰ সামৰণি মাৰিলো। আশা কৰো আমাৰ মহাবিদ্যালয়ৰ ছাত্ৰ-ছাত্ৰীয়ে মহাবিদ্যালয়খনৰ নাম সোণালী আখৰেৰে জিলিকাই ৰাখিবলৈ যথেষ্ট কষ্টৰে আগুৱাই নিব।

'জয়তু ছাত্ৰ একতা সভা'
'জয়তু প্ৰাগজ্যোতিষ মহাবিদ্যালয়'
জয় আই অসম।

পল্লৱ চৌধুৰী
সাধাৰণ সম্পাদক
PCSU, 2017-2018

Secretorial Report of Assistant General Secretary

At the beginning I would like to extend my deepest gratitude to the respected teachers of Pragjyotish College, students and to my friends for giving me a chance to serve as Assistant General Secretary of Pragjyotish College Students Union (2017-18). I also got the responsibility of Music Secretary as there was no selected or elected candidate for the post.

As Assistant General Secretary, I have conducted Saraswati Puja of 2018 along with President, General Secretary and other Union members. The General Fresher's Social was a great experience for me where along with General Secretary and other union members we completed a successful day.

As Music Secretary of PCSU (2017-18) I have completed various competitions of Music in college week which was held from 06/02/2018 to 10/02/2018. It was a great experience for me to organise such competitions.

I feel proud that in the Music Competition of Youth Festival the participants got huge success.

The tenure of our union ended in October. It was a great experience for me to serve for the union of Pragjyotish College. I want to thank every union member for being together and making 2017-18 a memorable one.

Long Live Pragjyotish College!
Long Live Pragjyotish College Students Union!

- Manash Pratim Koushik
Assistant General Secretary
PCSU, 2017-18

উপ-সভাপতিৰ প্ৰতিবেদন

প্ৰতিবেদনৰ আদিতে অসমী আইৰ সেৱাৰ বাবে, যি সকল বীৰ শ্বহীদে আত্মবলিদান দি গ'ল, সেইসকল অমৰ ব্যক্তিলৈ আন্তৰিক শ্ৰদ্ধা নিবেদন কৰিছো।

যি সকল ব্যক্তিয়ে দেশৰ মঙ্গল কাৰ্য্যত ব্ৰতী হৈ আছে তেওঁলোকলৈ মই শুভেচ্ছা জ্ঞাপন কৰিছোঁ।

জয় জয়তে ঐতিহ্যমণ্ডিত প্ৰাগজ্যোতিষ মহাবিদ্যালয়ৰ সমূহ ছাত্ৰ-ছাত্ৰীলৈ যাচিছোঁ মোৰ আন্তৰিক শ্ৰদ্ধা। লগতে হিয়া ভৰা কৃতজ্ঞতা জ্ঞাপন কৰিছো শত সহস্ৰ ধন্যবাদ জনোৱাৰ লগতে শ্ৰদ্ধাৰে সুঁৱৰিছো সেইসকল প্ৰাগজ্যোতিষীয়ান। যিসকলৰ সহায় তথা আস্থাৰ ফলত মই প্ৰাগজ্যোতিষ মহাবিদ্যালয় ছাত্ৰ একতাৰ সভাৰ ২০১৭-১৮ চনত ছাত্ৰ সভাপতি বিভাগৰ পদত নিৰ্বাচিত কৰি মহাবিদ্যালয়খনৰ লগত জড়িত সকলোকে সেৱা কৰাৰ সুযোগ দিয়াৰ বাবে প্ৰাগজ্যোতিষ মহাবিদ্যালয়ৰ সমূহ শিক্ষাগুৰু আৰু বন্ধু-বান্ধৱী, ছাত্ৰ-ছাত্ৰী বৃন্দলৈ মোৰ ‌(তৰিক কৃতজ্ঞতা জ্ঞাপন কৰিলো।

সকলোৰে এক উজ্জ্বল আশা লৈয়েই নিৰ্বাচনত উঠে, সেই আশা কিমান দূৰ সফলতা অৰ্জন কৰিব পাৰিছো সেয়া মই কব নোৱাৰো।

কিন্তু মই মোৰ কাৰ্য্য নিৰ্বাহৰ কালছোৱাত নিষ্ঠা সহকাৰে দায়ত্ব পালন কৰিব চেষ্টা কৰিছো।

প্ৰাগজ্যোতিষ মহাবিদ্যালয় একতা সভাই সমূহ প্ৰাগজ্যোতিষীয়ানৰ সহযোগত যথেষ্ট উৎসাহ-উদ্দীপনাৰে সমূহ কাৰ্যসূচী পালন কৰিছিল।

মহাবিদ্যালয়ৰ সপ্তাহ নৱাগত আদৰণি সভা আৰু মহাবিদ্যালয়ৰ প্ৰতিষ্ঠা দিৱসৰ সফলতা আছিল অভূতপূৰ্ব।

অৱশেষত মোৰ সফলতা বা বিফলতাৰ মাপ কাঠি বিদ্যালয়ৰ শিক্ষক-শিক্ষয়িত্ৰী আৰু ছাত্ৰ-ছাত্ৰী সমূহ আৰু মোৰ মৰমৰ বন্ধু-বান্ধৱী সকলে বিবেচনা কৰিব।

কেতিয়াবা নজনাতে কৰা ভূল ভ্ৰান্তিৰ বাবে সকলোৰে ওচৰত ক্ষমা প্ৰাৰ্থনা জনাইছো। মহাবিদ্যালয়ৰ উজ্জ্বল ভৱিষ্যত কামনা কৰি মোৰ প্ৰতিবেদন সামৰণি মাৰিলো।

'জয়তু ছাত্ৰ একতা সভা'
'জয়তু প্ৰাগজ্যোতিষ মহাবিদ্যালয়'
জয় আই অসম।

জিণ্টু দত্ত
উপ-সভাপতি
PCSU, 2017-2018

Secretarial Report of Cultural Secretary

My experience of working as an Union Body member for one year was overwhelming. It was of utmost happiness to find out so many talented students in the cultural aspects from our institution though it got difficult tat times to manage between attending the classes regularly and managing the union works, but the experience, all in all, gave me scope to learn a lot. Right from the elections till the last day of working as the cultural secretary, every day was a new experience. I am very grateful to my advisor-in-charge, Dr. Bishwajyoti Mahanta sir for giving me and helping me out through every little details. I consider myself fortunate to have worked with such a wonderful union body where everyone was helpful. The tenure went well and I hope I could do justice to my post.

Nikita Bhowmick
Cultural Secretary
PCSU 2017-18

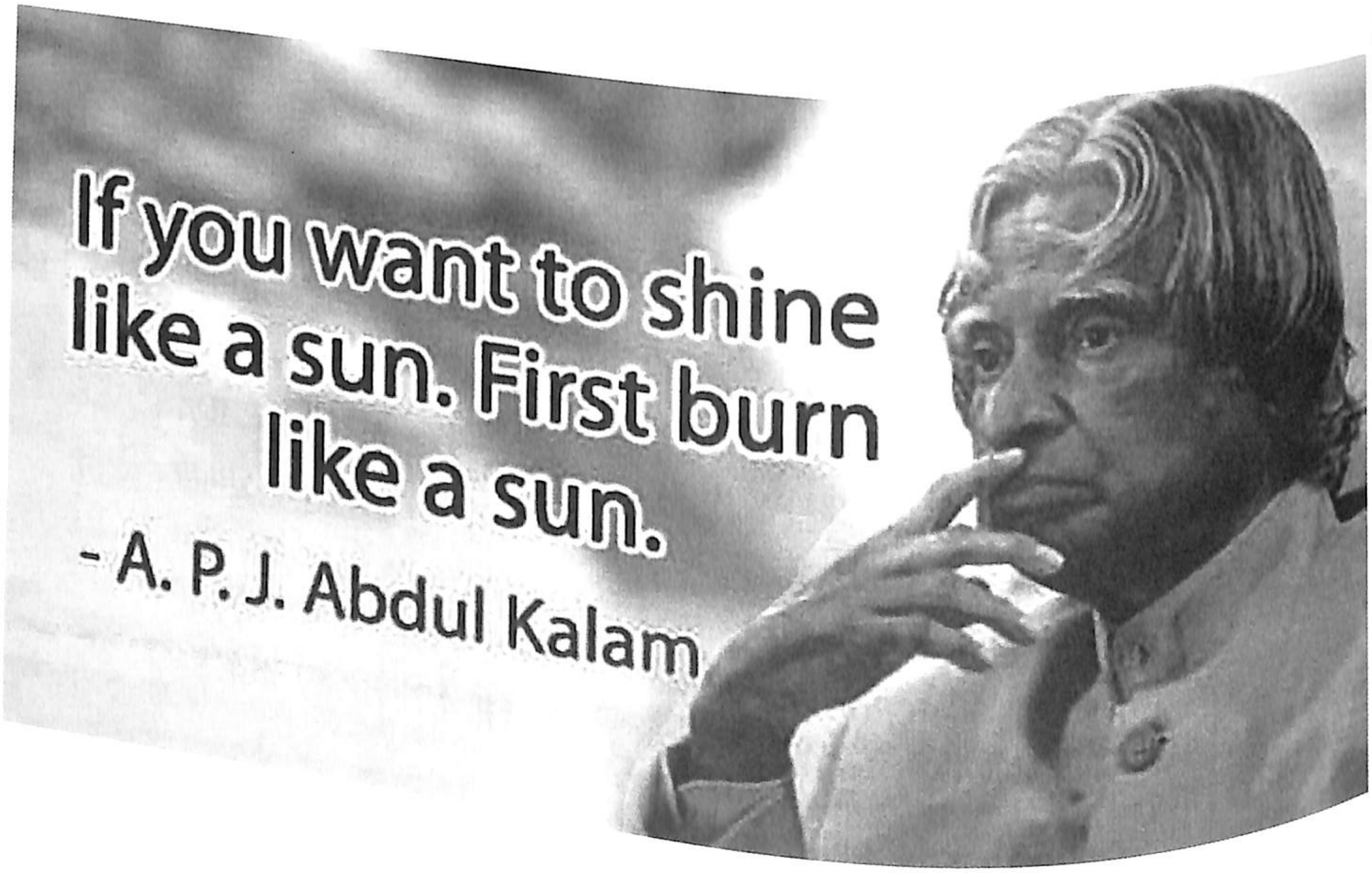
If you want to shine
like a sun. First burn
like a sun.
- A. P. J. Abdul Kalam

জনপ্ৰিয় অভিনেত্ৰী প্ৰস্তুতি পৰাশৰ সৈতে মুখামুখী

- সাক্ষাৎকাৰ গ্ৰহন *কৰিস্মা দাস*

নামঃ **প্ৰস্তুতি পৰাশৰ**
জন্ম ঃ যোৰহাট, মালৱাৰী পঞ্চৱতী
পিতৃৰ নাম ঃ শ্ৰী বিজয় শৰ্মা
মাতৃৰ নাম ঃ শ্ৰী বিজয়া শৰ্মা।
শিক্ষাঃ যোৰহাট বাল্য ভৱনৰ পৰা শিক্ষা গ্ৰহণ কৰিছিল। যোৰহাট জে. বি. মহাবিদ্যালয়ৰ পৰা স্নাতক বাণিজ্য
বিভাগত গ্ৰহণ কৰো আৰু গুৱাহাটী কমাৰ্চ মহাবিদ্যালয়ৰ পৰা এম. কম কৰিছিলো।
বঁটা প্ৰাপ্তিঃ আঞ্চলিক বঁটা কেইবাখনও পাইছোঁ। মোৰ প্ৰথম প্ৰথম চলচিত্ৰ 'মহাৰথী' তাৰ কাৰণে পাইছিলো শ্ৰেষ্ঠ
প্ৰধান অভিনেত্ৰী; ৰাষ্ট্ৰীয় বঁটা পাইছিলো 'গুন গুন গানে গানে' চলচিত্ৰত শ্ৰেষ্ঠ অভিনেত্ৰীৰ বাবে। ভ্ৰাম্যমানৰ বঁটা
কেবাটাওঁ পাইছিলো।
দাদা চাহেব ফাল্কে ফিল্ম ফেষ্টিভেল 'মৃগনাভী' চলচিত্ৰখনৰ বাবে শ্ৰেষ্ঠ অভিনেত্ৰীৰ বঁটা পাইছিলো।
অভিনিত চলচিত্ৰ ঃ চলচিত্ৰ এতিয়ালৈ বহুত আছে তাৰে ভিতৰত - মহাৰথী, তুমি মাথোঁ মোৰ, প্ৰিয় অ' প্ৰিয়া, চুৰেণ
চোৰৰ পুতেক, গুণ গুণ গানে, ৰং, দিন-বন্ধু, ৰামধেনু ইত্যাদি।

প্ৰশ্নঃ *কিয় আৰু কেনেদৰে অভিনয়ৰ প্ৰতি আকৃষ্ট হৈছিল?*
উত্তৰঃ মই সৰুৰে পৰা অভিনয়ৰ প্ৰতি আকৃষ্ট আছিলো। মই ভাবো যে যিকোনো কাম বা কাৰুকলাৰ প্ৰতি
আকৃষ্ট হ'বৰ বাবে জন্মগত ভাৱে থাকিব লাগে। মোৰ আছিল বাবেই মই সৰুৰে পৰা অভিনয় কৰি ভাল
পাইছিলো।

প্ৰশ্নঃ *আপোনাৰ পিতৃ-মাতৃৰ ভূমিকা কি আছিল?*
উত্তৰঃ মোৰ জীৱনত মাঁ-পিতাৰ ভূমিকা অপৰিসীম। মোক মোৰ মাঁ-পিতায়েই মুকলিভাৱে ডাঙৰ কৰিছে। মই ঘৰৰ
ডাঙৰ ছোৱালী আছিলো সেয়েহে মই সৰুৰে পৰা পৰিপক্কতা পূৰ্ণভাৱে ডাঙৰ হৈছিলো।

প্ৰশ্নঃ আপোনাৰ জীৱনত বেছিকৈ প্ৰভাৱ পৰা ব্যক্তি কোন?

উত্তৰঃ মোৰ মাঁ-দেউতাৰ ভূমিকা আটাইতকৈ ওপৰত কাৰণ তেওঁলোকে আজিলৈ মো প্ৰেৰণা দি আহি আছে। দেউতায়ে মোক এটা কথাকে কৈছিল যে - "তই যিয়ে ক'ৰ অভিনয় ক'ৰ, যিয়ে ক'ৰ কৰিবি কিন্তু পঢ়াটো নিজৰ প্ৰাধান্য দিয় যেন।" মোৰ বিশ্বাস যে পঢ়াৰ কাৰণে ৰপ্ত-ৰহু ঘন্টা দি অন্যমনস্ক হৈ পঢ়াৰ মেজত বহি থাকাতকৈ ৰ-চ ঘন্টা মনোযোগ দি পঢ়িলে ভাল। মোৰ স্বামী এতিয়া মোৰ জীৱনৰ মজবুত স্তম্ভ।

প্ৰশ্নঃ বঁটা সন্মান আদিয়ে শিল্পীক আকৃষ্ট কৰেনে?

উত্তৰঃ কৰে কিছুমান শিল্পীক কিন্তু আকৃষ্ট বুলি ক'ব নোৱাৰি। বঁটাবোৰ হৈছে কিছুমান জুৰি সদস্যৰ দৃষ্টিভঙ্গি কিন্তু পুৰস্কাৰ হৈছে সকলো দৰ্শকৰ দৃষ্টিভঙ্গি। মই পুৰস্কাৰ প্ৰাথমিকতা দিও।

প্ৰশ্নঃ আপোনাৰ সংস্কৃতিক জগতৰ প্ৰতি কিবা আক্ষেপ আছে নেকি?

উত্তৰঃ আক্ষেপ বুলিবলৈ নাই কিন্তু আমাৰ জাতীয় ভাষাৰ প্ৰতি আগ্ৰহি হোৱাৰ আগতে নিজৰ মাতৃ ভাষাৰ প্ৰতি প্ৰাথমিক গুৰুত্ত দিয়াটো উচিত আৰু প্ৰয়োজনীয়।

প্ৰশ্নঃ অসমীয়া সমাজত পাশ্চাত্যৰ প্ৰভাৱ সম্পৰ্ক ধাৰণা?

উত্তৰঃ পাশ্চাত্যৰ প্ৰভাৱ পৰিছে আৰু পৰাটোও বেয়া নহয় যিহেতোকে আমি ইন্টাৰনেটৰ যুগত আছো।

প্ৰশ্নঃ শিল্পী সমাজৰ প্ৰতি কিবা আহ্বান জনাব নেকি?

উত্তৰঃ আহ্বান জনাবৰ বাবে মোৰ এতিয়া একোকে ক'বলগীয়া নাই। কিন্তু সকলোকে কৈছো যে কষ্টৰ বিকল্প একো নাই।

প্ৰশ্নঃ আপুনি চলচিত্ৰৰ সৈতে কেনেদৰে জৰিত হ'ল?

উত্তৰঃ বনি দাস মোৰ প্ৰথম পৰিচালক। তেওঁ মোৰ এখন নাটক চাই 'মহাৰথী' চলচিত্ৰ খনৰ বাবে বাছনি কৰে। মোৰ নিজৰ আপোন প্ৰিয় চলচিত্ৰ আছিলে - দিনবন্ধু, মৃগনাভি, ৰামধেনু, গুণ গুণ গানে গানে।

প্ৰশ্নঃ চলচিত্ৰক লৈ আপোনাৰ ভৱিষ্যৎ পৰিকল্পনা কি?

উত্তৰঃ পৰিকল্পনা কৰিবলৈ বহুত টান বিশেষকৈ অসমত, কাৰণ আমিবোৰৰ মাজত অনুসন্ধানৰ অভাৱ আছে সেইবাবে পৰিকল্পনা কৰাটো টান।

প্ৰশ্নঃ পঢ়া-শুনাৰ লগতে অভিনয় সমানে কৰিবলৈ আপোনাৰ কেনে সমস্যা হৈছিল?

উত্তৰঃ মই পঢ়া-শুনাত একোৱেই সমস্যাৰ মুখামুখী হ'বলগীয়া নাই হোৱা কাৰণ অভিনয় মোৰ প্ৰথম প্ৰেম আৰু পঢ়া শুনা মোৰ দায়িত্ব আছিল, আৰু মই ভাবো যে মানুহে যিকোনো কামেই মনোযোগ দি কৰিলে সকলো পিনেৰে সফল হ'ব পাৰে।

প্ৰশ্নঃ বৰ্তমান ৰাজনীতিৰ পৰা কি বিচাৰে?

উত্তৰঃ ৰাজনীতিৰ পৰা মই এটা কথায়ে বিচাৰো যে আত্মকেন্দ্ৰিত নহৈ নিঃস্বাৰ্থভাৱে প্ৰত্যেক ৰাজনীতিবিদে অসমৰ কাৰণে চিন্তা কৰিব লগাটো প্ৰয়োজনীয়, কোনো ৰাজনীতিবিদ বা ৰাজনৈতিক দল নাই যিয়ে অসমৰ কথা চিন্তা কৰে আৰু সততাৰ আৰু বিশ্বাসৰ অভাৱ, অসমতে নহয় সকলো দেশতে বিশ্বাসযোগ্য ৰাজনীতিবিদ প্ৰয়োজন হৈছে।

মহাবিদ্যালয় সপ্তাহৰ বিশেষ মুহূৰ্ত্ত

প্ৰাচীৰ পত্ৰিকা

মহাবিদ্যালয় প্ৰকাশন

নৱাগতা আদৰণি সভাৰ বিশেষ মুহূৰ্ত্ত

বিভিন্ন অনুষ্ঠানৰ কেইটামান মুহূৰ্ত্ত